

क्रमांक १६

मराठी

काव्य

२५

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५१६

ग्रंथ तीर्थावळीचे अभंग

विषय मराठी काव्य.



तीर्थावळीचे अभंग

नामदेव कुत

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वतीयनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥

॥ श्रीज्ञानेश्वरायनमः ॥ नामवाचेभेदीज्ञानेदेवआले

॥ लोरांगणघातलेनामदेवे ॥ देउनिआकिंगणप्रितिव

॥ डीमरे ॥ पुजिलेआदरेयेथाविधी ॥ १ ॥ धन्यतोअवस

॥ रसंताचासमागमु ॥ होतसेसंभ्रमुआवडिचा ॥ २ ॥ ना

॥ माह्मणेआजिधन्यमासेजिणे ॥ स्वामीच्यादर्शनेपुनितज

॥ लो ॥ १ ॥ पुर्बपुण्यआजिजालेफळेसुख ॥ देखिलेप्रसह

॥ पांडुरंग ॥ २ ॥ संसारीआसकमायामाहरत ॥ तापत्रेसंवस

॥ जालेजीव ॥ ३ ॥ तयापतिनांचकराव्याडद्वार ॥ गालागि

॥ अवतारतुमचाज ॥ ४ ॥ जेव्हादेखायेवदितमूढमतीहीन

॥ चरणिचेरजरेणसंताचिये ॥ ५ ॥ णोनीपंढरीनाथेपाळिले

॥ सेमाते ॥ प्रेमजीवन ॥ ६ ॥ तेदेउनीयां ॥ ७ ॥ आजिमजस्वामिने

॥ पाहिलेहृपाट्टि ॥ ८ ॥ केलीसुखदृष्टीअनिवार ॥ नामाह्मणे

॥ तुमच्याचरणचाआधारठाकिनपैलपारमवसिंधूचा ॥ ९

॥ स्नानदेवह्मणेभक्तसिरोमणी ॥ १० ॥ जोडिलेजन्मोनिकेशव

॥ चरण ॥ ११ ॥ जेनी ॥ १२ ॥ प्रेमसुखगेडीतूजचिक्कावडी ॥ वासना

॥ माळकलीसर्वतूली ॥ १३ ॥ धन्यतुसाजन्मधन्यतुसेकळ ॥ १४

॥ चतुजराउळजवळिअसे ॥ १५ ॥ भक्तिप्रेमसुखसाधिलेनिजसार

॥ केलापैसंसारदेशधडी ॥ १६ ॥ णयेकयेकांतियेसोनि सहज ॥ १७

॥ तरीचेंगुजजोळोकाही ॥ १८ ॥ जीवन्मुक्तज्ञानीजहिंजालेपाव

॥ न ॥ परिदेवतीर्थभजननसंजीती ॥ भक्तसिरोमणीधन्यतुसं

॥सारी॥परिवेक आवधारों वचन मासें ॥३॥भूत कीवित्ती
 ॥ये पाहावी नयनी॥अर्त मा सामनी बह वसे ॥प्रेसंगे नाम
 ॥यापेसंगे सुख ध्यावे सार्थक करवे देहाचे या ॥४॥हेचि
 ॥अर्त बह निस होते मा सापोटी ॥भाग्ये जाली मेटो न कर
 ॥या ॥शान देव ह्येण पुरवि म मोर थ ॥करावे मुहुर्त प्रयाणा
 ॥सी ॥५॥जती ॥२॥ऐसे रे कोणि बोलणे विचारी मानसी ॥
 ॥ह्येण काय व्यावे या सिंप्र सोनर ॥मग विठोबाचे पाये आ
 ॥ठविले मनी ॥बोले अस ववाणी तया प्रती ॥१॥सर्व सुख
 ॥मज आहे पांडुरंगी ॥वैकुण्ठ लाली ॥वैकुण्ठ तीर्थ ॥६॥
 ॥अहिक परवि मज चड नाहि संध्या ॥नळ गति पुरुषार्थ
 ॥मुक्ति च्या ही ॥अरं कते तु निपा पंदरी ॥चोदूं ॥राखे नार
 ॥बंद महांदा ॥२॥जसुखी ॥रणे शिर ध्वती कोडिले
 ॥दुर्जय तोडिले मायाज ॥विजु वनिचे वैभव सांडुनियां
 ॥दुरि जालों संति मारा ॥३॥कळतरु पिछा यात्रा
 ॥मधे नु येदु मते ॥आहे ति ॥इतें सकळै काम ॥विठोबाचे
 ॥पाई मज कायि उणे परि वासना ची मने गिळिली मासी ॥४॥
 ॥जमो निपाळिलों पोसिलों जयाचा काया मने वाच्यं कि वि
 ॥लों सासि ॥नामा ह्येण मास्या विठोबा सी सुसा ॥आली
 ॥देईल सिरसा वंदि न लाची ॥५॥जती ॥३॥शान देव ह्य
 ॥णे भळा भक्त राजा ॥कळलें गेव्य गुज सेवतु से ॥धिर आ
 ॥पी च नुर सवस्वें उदार ॥साजे तुज अधिकार प्रेम भक्ती ॥१॥
 ॥धन्य तु संसरी भक्त भावशील ॥सा धिळे वेवळ प्रेम सु
 ॥ख ॥७॥मग देउनि आळिं गणना मा धारि ला करि ॥

3

॥ वंदियेलेसिरीचरणरज ॥ राठळामितरींचालजाउवेगे ॥
 ॥ आस्तामागेदोघेंतीर्थयात्रे ॥ २ ॥ मगसत्तरआलेपांडु ॥
 ॥ रंगजावळि ॥ मस्तकचरणकमळिठेविवेला ॥ जिविंचा ॥
 ॥ निजभावोसांगेशानदेवो ॥ आईकोणिपंढरिरावोहांसि ॥
 ॥ प्रेला ॥ ३ ॥ ह्मणेतुंशानरीळचित्स्वरपकेवळसबाह्यनिमी ॥
 ॥ लक्ष्मिदेवता ॥ सहजकीर्थरूपतुंचिनिरंतर ॥ असतां ॥
 ॥ हाविचारकायकेला ॥ ४ ॥ येरह्मणेश्वामीबोलिलेतिबरवे ॥
 ॥ परिसार्थकिरावेयांदेहावे ॥ प्रसंगेनामयाचेसंगतीसुख ॥
 ॥ ध्यावे ॥ ह्मणोनीशानदेवेंधरीलेचरण ॥ ५ ॥ जती ॥ ४ ॥
 ॥ मगहांसोनिपंढरीराजपाहनांम्याकडे ॥ नवलपैकेंह ॥
 ॥ उंभाग्यतुल्य ॥ प्रसन्नपरबलमुर्तिज्ञातेश्वर ॥ करितसे ॥
 ॥ आदरसंगतीचा ॥ ॥ जेणेसर्वसंसाधावे ॥ त ॥
 ॥ दिवजन्मांयावेविष्णुदासा ॥ २ ॥ जावेस्वस्तक्षेमावे ॥
 ॥ शिघ्रवत ॥ करावेस्वस्तिककलनैसे ॥ सर्वभावमांसा ॥
 ॥ विसरुनकावालोम ॥ ॥ याकामजवरी ॥ २ ॥ मग ॥
 ॥ श्वानदेवोअतिविनवीलगजीवन ॥ तुंतवंसर्वहूप्रेम ॥
 ॥ मुर्ति ॥ परियेकमागणे ॥ ॥ सेतुजप्रतिआठवणचिनि ॥
 ॥ असोंधावी ॥ ३ ॥ हेहपेचेंपोसणेंनामेंआवडतें ॥
 ॥ क्षणजिवापरतेंनकरींकदा ॥ परितुबांसांकडेबावले ॥
 ॥ सर्वथा ॥ दारलेअवस्थाहृदयमासे ॥ ४ ॥ आरुषसाबडे ॥
 ॥ नामेंमासेवेडे ॥ मार्गिमोगेंपुढेंसांभाळावे ॥ ताहान ॥
 ॥ भुक्तुहीजाणवीजीविची ॥ चिंतामजयाचीथोरवाटे ॥ ५ ॥
 ॥ मगनामेयाचाहातकरिधरनिश्रीपतीदेतुअसेहार्ति ॥
 ॥ श्वानदेवा ॥ यासिंजनीवनीविसंबसिसृणी ॥ धाडिवां

॥ देवुनि आर्त तु मचे ॥ ६ ॥ चरणी ठेउनि माथानि घते
॥ जाले दोघे ॥ आले चंद्रभागे स्नान केले ॥ पुंडलिका
॥ ये वरणन मस्कारुणि नामा ॥ उतरले मिमापैलुतिरी
॥ ७ ॥ जती ५ ॥ तीर्थयात्रे प्रतिबोळुनि नामा ॥ आले
॥ निज धामा देव रावो ॥ चरण प्रक्षाल्या व्याखुमा देविका
॥ ली श्रीमुख निहाळी भरुणि दृष्टि ॥ १ ॥ तूंच निजारले न
॥ यन खेद भीन लंब दन हृदय जाले पूर्ण करुणारसे ॥ ६ ॥
॥ आप करुणा सिंधु सुखाचा सुखतर ॥ आर्ति लोभापत
॥ दिनालागि ॥ चरणी ठेउनि माथा पुसे जगत्माता ॥ वि
॥ परित आवस्यो वाटे आजो ॥ १२ ॥ जोडे जड भारि नामा
॥ व्यावियो में दाटले उदरे गंदय मासे ॥ कळणे सुखि
॥ स्मिर महे मासे मन ॥ देवा देवेन धाण भासा ॥ १३ ॥
॥ इष्ट मित्र बंधु सोय ॥ मज वातु नुन मनि कोण
॥ माय व्याप बंधु पुत्र ॥ वतल हं नाये मज ये काठे विलीते
॥ १४ ॥ तो कैसा मज ॥ आपला प्राण हे वितादार
॥ गळे वेणो सांगु ॥ मज ॥ तव तम हमाथा ॥ मृणे जीवा दषराया
॥ सणेतु मया नाम यादिले लोणे ॥ ५ ॥ सोक मोह दुःख क्षण
॥ मार्जे जळते ॥ जीवन जवळें नाम तुसे ॥ ६ ॥ जती १६
॥ मासे भ्रम जलनु सरले चिते ॥ मज त्याह निपटीयंते आणि क
॥ नाही ॥ मज व्यक्तीये घडे सांचिये आवडी युगे युगे त्रौटी मि
॥ रवि हेचि ॥ १ ॥ सांचे निहस मीज से पुर्ण काम ॥ ते मासे परम प्राण
॥ सखे ॥ ६ ॥ मीं साचा विश्राम ते मासे आश्रम जिहि रूप नाम मज
॥ केले ॥ ते मासे सोयेरी मीं साचा सांगति ॥ करि संसि वं कंती सु
॥ रवगे टी ॥ २ ॥ गुजगे व्यसाचें मीचि जाणे सर्व हा मासा अनुभव
॥ आहे सांसी ॥ ते मासा माग्याचे जाले हो विभाशि वेकुं दुःखा
॥ शिव स्वते केले ॥ ३ ॥ तनु मन धम जिहि लाविले मज कडे ॥ मी

॥ सा सिं आवडे जी उजे सा ॥ मना वी सा उली करुणि यामते ॥
 ॥ भोगिती आतो ते निरु सुख ॥ ४ ॥ आपुला विकीणी विराने
 ॥ ॥ मम स्त्री ॥ परि कीर्ण ते न हें आने जे विगते से मा शे दा समज
 ॥ ला गी उ दा स आ हे मिस मर स दु जे न विण ॥ ५ ॥ मी चि भ क र प
 ॥ भक्त मा से स्व र प प्र भा आ णि दी प ज या परी ॥ हे र वु ण जा य दे
 ॥ अनु भ वि ह्या नी ज्या ना ही आ य णि सं क ल्मा नी ॥ ६ ॥ सा
 ॥ विये व र णि चै र ज रे ण मा से ना मे ॥ संडि ले र ज ते मे स व सीळ ॥ न
 ॥ या ला गि मा से विते क क वळे ॥ कै दे र वैन डोळे नि वती मा से ॥ ७
 ॥ ज नि ७ ॥ स प्रे म ल भ क्त आव ड ते आपु ले दे वे बो ला विले ये का ता सि
 ॥ सा न म मा पर ते आ न का णि मा व डे सां गे त मां पु ट के शी रा जा ॥ १ ॥
 ॥ सा ते दे खे दृ ष्टि म न मा से नि ॥ वा ट ते बा जे व द द या मा जी ॥ १८
 ॥ त था चे नि लो के म न मा से मो रिले अ र व ड रा हि ले सा वि पा
 ॥ सी ॥ ११ ॥ भ क्त ज न के वारी न ण ते वा टे ला ज ॥ म्मा ना हो दे
 ॥ ले का ज कां ही या चे ॥ १२ ॥ म न र्हा सा दि ध ले ज मो
 ॥ नि बां ध ले से व र णे ॥ १३ ॥ त र्पे ले नि प र धा र्थे जि वि ला
 ॥ सुं तार के ला म द मु र ॥ १४ ॥ लो भ दं मु द र ल म्मा या
 ॥ मो ह वै री ॥ धा व ले तो र त ना न को धा ॥ १५ ॥ तो न म नि जा
 ॥ मि के दे वा न क रि हा वि से या ॥ म ज पर ता वि सा वां ना ही
 ॥ सा सी ॥ वे मा गि सि पा ले अ सै ल को मा र्हे नि ज गु ज
 ॥ आ पु ले सां गे ल को णा ॥ १५ ॥ या चिये जि वि चे मी चि ज्ञा णे
 ॥ सु व हा मा सा अनु भ व आ हे सा सी ॥ तो मा सा म ज वि ण रा खे ल
 ॥ कै सा प्रा ण हे विं ता दा र ण क व णा सां गे ॥ १६ ॥ दे र वो नि ते आ
 ॥ व डि अ भि न व वा ट ले ॥ स प्रे मे दा र ले स कळे सं त ॥ पर सा
 ॥ भा ग व त आ नं दे ना च त लो टां ग णे घा ली त ग र ड पा री ॥ १७ ॥
 ॥ ज नि ८ ॥ ये से सु ख रू प दो घै चा ल ता ती मा गी चित पां ड रं
 ॥ जी ना म या चे ॥ पर तो नि बां वा स द्द पौ क्ष ण क्ष णा पा हे वि यी
 ॥ ग न सा हे पं ठ री चा ॥ १८ ॥ कां ग के शी रा जा मा क लि ले मा ने

॥ नयेसिसंगतेबोळवीत ॥ ४५ ॥ चिंतातुरथोरपडिलोपरज
॥ नीनदिसेमाझेकोणहीजिवलगू ॥ फुटोनिहृदयहोपाहेस
॥ निभागबहुंमजउद्देगवाटतातो ॥ ४६ ॥ तंमासिजननीतुं
॥ मासाजनितातुंवंधुबुलवापांडुरंगा ॥ तुंचिइष्टमित्रतुंचि
॥ गणगोत्रतुंचिकुळदेवतआवडेविं ॥ ४७ ॥ तुंचिमासेवृत्त
॥ तुंचिमासेतीर्थधर्मकामअर्थपांडुरंगा ॥ तुंचिमासे
॥ लक्षतुंचिमासामोक्षतुंचिमासासाक्षसर्वभुति ॥ ४८ ॥
॥ साचकिलुटिकेहेमाझेबोलणे ॥ तुजवांचुनिजापोकवण
॥ जा ॥ नामास्यणेआपुलेअनाथसांभाकी ॥ येउनिहृद
॥ यकमळिगहेमास्या ॥ ४९ ॥ तंवंशानदेवस्यणे
॥ येकेविष्णुदीसातुंसुर्यसंतोषापात्रहोसि ॥ त्रेमाचजिह्वा
॥ कातुसाहेदईआह ॥ तुंकावेळीवेळीकरिसिरवति ॥ ५० ॥
॥ विचारींसावधहोउ ॥ तिमन्यानामखानंदुसातुजजव
॥ किअसे ॥ ५१ ॥ मीनेतआनगा ॥ नेणोयोयुक्तिनदेखं
॥ गविश्रान्तियेकेंविषासक ॥ मजतेविआवडेजेपुउळे
॥ कापुढेउभेअसे ॥ ५२ ॥ तंमासा ॥ उलसापादष्टिभरीआस
॥ मीनकरिआणिकांची ॥ आपकविठलुआहेसर्वदेशीज
॥ रिसांडनिपाहासिमेदधम ॥ ५३ ॥ नाहोयेसाठावउरलमे
॥ कवणसर्वत्रसंपूर्णगगनजैसें ॥ कायावाचामनेतोचिमज
॥ फ्लावा ॥ आठविताजिवासुखवाटे ॥ ५४ ॥ येकावाश्रवणिदेखा
॥ वानयनि ॥ नवचाबाजवकुनिदरिकोठे ॥ जेअक्षरअक्षर
॥ देशकाळरहितमानितुपासितसोहंभाव ॥ ५५ ॥ सर्वेइयासहि
॥ तआवरनिचिंतभोगितिअदेतनिसुख ॥ सर्वसुखमज
॥ आहेसाचापाईआणिकाचावाहिनपुडेंकदा ॥ ५६ ॥ तेथेमा
॥ सेमनरंगलेसर्वभावविश्रान्तियाजिवंदेखियेली ॥ जेस
॥ गगतसंपूर्णसर्वकाळअसणेहो ॥ आणिजाणेनाहितया
॥ ५७ ॥ देतुजमाक्षारीतुंसाजमितरी ॥ अनुभवनिनिर्धासिठउ
नि ॥ निमना

॥ मीन मनीन मनी डेलुट की का हाणी जल धरा वां कुनि वात
 ॥ के जे विं ॥ ८ ॥ तै सै मा सै मन स्मरे खवि दिवस ॥ पंढरी निवास
 ॥ निवन मा सै ॥ देखानि तो निधीर बोले ज्ञान देवा ॥ धन्य तु
 ॥ सा भाव ये क विध ॥ ९ ॥ नामा स्मरणे मा स्या सुखा वा विसा का
 ॥ आव डेतो जीवा पांडुरंग ॥ १० ॥ जति ॥ ११ ॥ निहानं द भरित
 ॥ कर्मिता ति मार्ग ॥ अंतरि अनु राग आवडि चा ॥ प्रे मे वो सं उत
 ॥ करिता ति सुख जे छि ॥ दाविति क सखि अनु भवा वि ॥ १२ ॥ व्याप
 ॥ ते सुख द छि होत स अनिवार ब्रह्म र संपुर वो सं उत ॥ १३ ॥
 म ॥ हान देव स्मरणे परिय सिं नाम या अद्वैत आ ॥ प्रेम मुति ॥ १४ ॥
 ॥ कि भाग्य तु बां जो छि ॥ अविनाश संग पां स विलास मार्ग सा
 ॥ या ॥ १५ ॥ कै सी ते सा धावी ॥ संग भजन विधी कै सी मन बुद्धि स
 ॥ हसी का ॥ कै स निर्विकार ध्याना या प्रकार हा सखि विचार
 ॥ सांग मज ॥ १६ ॥ कै र ॥ तै सै मन ॥ कै स निज ध्या
 ने ॥ सन द ह होये ॥ कै सी ते ॥ तै ते पै ॥ कि कोण विश्वा
 ॥ ति दा विं मज ॥ १७ ॥ उ लं ॥ द विन ॥ सुखा कारणे ते आ जितार
 ॥ गणे कर विं मज ॥ सांग ता ॥ अनु भव ता ॥ धन उपाव विन वी शान दे
 ॥ वना मया सि ॥ १८ ॥ जति ॥ १९ ॥ जै स रे को निने बोले गे चरणी ॥
 ॥ घाली मिठी दाट ला से क ठि स द दीव ॥ मीन दुख ये पो स पो पंढ
 ॥ रिराया ये ये दुहे भाग्य ये चला गि वे चें ॥ २० ॥ मीन के बह भृत न
 ॥ के हान सी ल दास मी दुख ब ये स्या वा ये ॥ २१ ॥ मीने ज ते नेण
 ॥ के का हि चने ने लोने नी पंढरि नाथे निरबीले ॥ ये तां मा स्त कर
 ॥ दि धल तु म ये करी ॥ धात ले आ भारी माय बापे ॥ २२ ॥ सा स्या दु
 ॥ पाव से ये इ ल वा चे सरि से ॥ कुले मज ते सै निवे दीन ॥ परि सा
 ॥ तु सी देखणे की जे अन ते ने ते सै हान मा सै स्वा मी पुढे ॥ २३ ॥
 ॥ क अंतर या च क ल पण दारि दे न्य भा की थोरी काम धेनु ॥
 ॥ तै सी तु म चियां स्या मज दीना प्रति न क के काळ गति समुदा
 ॥ ची ॥ २४ ॥ मात विधा ले भै वा ल बोले का क डे खे के बा डे को डे ने

७

ने

मज

॥पोलाज॥नामाहणे ते संतु ही माझे कोतुक करुनि सुख
 ॥सुखवाढविता॥५॥जति॥१२॥तव येसु मणेशका न्धारि
 ॥कां हि मनि दृष्टि दजे पुणि न ठेवावी॥सुखे सुख व्याव
 ॥नुभव अनुभवो॥आहे व्याघ्र वेंबें हस्तप॥१॥सुखावा
 ॥नुभव करिरे सुखरुपा सुखवस्तु चिदपानामदेवा॥६॥
 ॥सुखावियेताहि सुख चि वोगरीं त ही जालि थोरी सुधा
 ॥तुरां॥पंढरी सायाचातुं प्रेमभांडरी आस पूर्ण करी मज या
 ॥चकाची॥२॥सिंधु हनि सखोल सुरसतु सैबोल व्यानं
 ॥दक्षिबोल निवनवी॥ते मज साचार ऐक विसाद रक्षवण
 ॥सुधातुर जाले माझे॥३॥विश्रान्तिये पावतुं चि विष्णु रा
 ॥साहामें शी भवसा आहसस॥मणो नितु सासंगु धरिला
 ॥यवि आशानु करावे दस भेदाया॥४॥जाणि वराहा
 ॥णि वतीर वराभेस जिवि वि॥सुभा विवरायाचा॥५॥
 ॥नंद वलणे तुं मला॥अरुण नल गजपांगव हजने चा॥६॥
 ॥जति॥१३॥दे सें ये के॥कोनि लणे करणी घाली दृष्टी म
 ॥णे बोल विंगोष्टि अनुभव चा॥येर ते अंधक सर्व हि पाळ
 ॥ल श्रमु चि के वळ जाणे चेचा॥१॥येसा संत विरका मेरे भाग्य
 ॥योगे को आशी कावे राग्य सप्रेमकु॥सर्व भावे करुनि स
 ॥व भूती करण जेथे मी तु पणा मावळ ल॥भजन तया नांव
 ॥वाटे मज गोड येर ते का वाड येणे पूजा॥२॥नमन नम्रता ते
 ॥नंद रेव गुण दोष अतरीं प्रकाश आनंदाने चा येर ते जाणा
 ॥वेदां भि क माया बी विव्यासु मीं जि विन धरि या चा॥३॥
 ॥ध्यान तया नांव निर्विकार नीकें जो विस्मि माझ्या दे रे वि
 ॥ठो बासी॥अखड हृदई ते वि आठवण साजिरे समपूरण
 ॥इंदे वरी॥४॥नादी लुब्ध जे सें आस कहरण जाये विसरा
 ॥नंदे हभाव यापरी तली न दृष्ट राहे मन हानां व अध्या

॥ नृपुत्रेभ्योऽर्चयेत्तानुसेंसुखनिसुतृसाभूकवादेथोरि॥६॥३॥
 ॥ ठितचित्त अखंडतुजकारणे तुजदेवेपारणे होयनयना ॥ अ
 ॥ नेताजन्माचाहाचिरुपानबंधतरि चप्रितिवादनतुटेनुष्टा॥३॥
 ॥ मज्जलागिदेहकर्वतिंघातलेथोरनपकेलेजमोजनि ॥ सुजुनि
 ॥ सर्वमायाविचेनिरोधिलें दृष्टंमज्जबंधलेवश्यकरुणि॥३॥३॥
 ॥ काईदिजेउतराईहोईजे ॥ येसेनदेखिजे त्रिभुवनि ॥ शरिरप्राण
 ॥ चेदेउनिबळिदानकेलेपैनिबीणभक्तताया ॥४॥ म्याकरावे
 ॥ दाखतुआपुलेनिआंगे ॥ तुजकांहीनलगेघेणेदेणे ॥ ना
 ॥ माह्मणेदेवातुंदिनाचाकैवारि ॥ म्हाणनिमजवरिकुरिसिमो
 ॥ हो॥५॥ जति॥४॥ ॥ भक्तजनवळळभक्तसुखरासिनिभर
 ॥ मानसिंपरमानंदें ॥ सरिसेसकळसंतघेउनिपंढरिनाथ
 ॥ निवाळेअक्षतयावणसीं॥॥ जापतेकैतुकिअनाथां
 ॥ आनाथाभोगियाश्रीमंतलेकुवेळे॥६॥ तंवनेउदितभा
 ॥ म्यधन्यधराभरभे ॥ येवढेकरहोते ॥ सकळसमुदा
 ॥ यमिनलेकुंडळतिथि ॥ सकळपतिदृष्टनासिं॥१२॥ बा
 ॥ पब्रंह्मप्यदेवापरबं ॥ नपुढकाकैलाडिजकुळांप्रपिपा
 ॥ त॥ सांडुनिभेदबुद्धि ॥ नतीहा ॥ कावेदुपाकरुणियावे
 ॥ भोजनासिं॥३॥ पाकावेआपुल्योदिधलेससुवचना
 ॥ कराविवासनातुसिमासि ॥ स्नानसंध्याविधिसारुनिस
 ॥ मस्त ॥ यावेसिघ्रवतनैवेद्यासिं॥४॥ तेनिवाळेदर्शनेतुसुजा
 ॥ लेमनेपरिसोनिवचनेअमृतोपम॥ आसींतरीआश्रितहें
 ॥ चिववनससुआशिर्वादनिसुदेउंतुह्यां॥५॥ सर्वभावेओ
 ॥ मुचाकरावासांभाळ ॥ स्वामिदिनदयाळविश्वबोलेतु
 ॥ श्रीमाहाराजराजेराजेश्वर ॥ पाहावेनिरंतरदुपादमि॥६॥
 ॥ तुमचाहाआदरनिरोपमसर्वथा ॥ दिधलिसेमान्यतावेद
 ॥ वचना ॥ तेभाकआपुलिजतनसर्वभावेकरुणिप्रेमध्यावेंना
 ॥ मयासीं॥७॥ जति॥४॥ ॥ बापआर्तबंधुसकळजिवनक

[illegible]

॥ प्रेमो ॥ २॥ हरि सो नार आदि करुणि ॥ १॥ वाप ह्यपा सिंधु ह्यपा
 ॥ लुमना च ॥ अमिमान दिन चा सिद्धि नेला ॥ ४॥ चो प्रामे ला वे
 ॥ का जून का प्राण सखा ॥ वां सराला डिको भाग्य वंत ॥ वैराग्या चा
 ॥ मेर तो गो रा कुंभार ॥ आवड ता डिंग सु केशा वा चा ॥ २॥ ऐसे थो
 ॥ रसाने सकळ भक्त राणे देवें आरोगणे बोलाविलें ॥ सुगंध चंद
 ॥ न धूप दीप तुळसि ॥ पुजिले सकळिकां सि पंढरि नाथें ॥ ३॥ तें
 ॥ वरा हरि स्व माई ससभा मासति ॥ विस्तार पि आणितिविविधें बो
 ॥ णि ॥ भो वंति भक्त मे उळि मध्ये वन माळि ॥ रो मने न मे उळि
 ॥ भक्त जैसा ॥ ४॥ समस्तां मुखि कवळु देतु से निज करे ॥ उचिष्ट
 ॥ पिता बरे सावरितु ॥ या सुखा पाड देतु सै रवे निवे कुंठि ॥ हो वसे
 ॥ लुलुटि ब्रह्मादिकां ॥ ५॥ ऐसे ते ते जे नाले खेळे मेळे ब्रह्मर
 ॥ संधाले सकळै मत ॥ निमाने आका राजा पै सै सकळ ॥ करिति
 ॥ नि को सळ पुण्या दृष्टि ॥ ६॥ देवो निदि ज वरां उल्लिखित वणि ॥
 ॥ आतां जालि हाणि जि ॥ विवाहा करुं ॥ शान मग नि न हें वैराग्य
 ॥ नवल भक्ति भाग्य आवडि ॥ ७॥ एक क्षण ते हा पांडुरंग साचे
 ॥ येऊं दे भाग्य कै वै मान विव ॥ ८॥ गुण वै न क्रिया क मति तया
 ॥ सिं प्रायश्चित के विंध ॥ ९॥ नाग ते सिं आप ना हि या सि पर ना
 ॥ हि या आचार जाति कुळ ॥ १०॥ उव गे सं मे ध ना हि या पा ग ई ॥ विक
 न ॥ ११॥ त्या यो ना हि चळें कदा ॥ १२॥ लपे बाळ क वळा सो य रा दि ना चा
 ॥ रुद्रा राम ना चा मे नी वी ले सा पर ॥ अनुसरे तया वै मा या जाळ तो डि
 ॥ बे सखे चि मोडी ससभा वें ॥ १३॥ या ना म्या चि मा ता आ ह्या तु ह्या
 ॥ देव तो सि गलि वे वा द तां ना ना परि ॥ घात ला पा ठि सि ने रि ति वा हा
 ॥ ति ॥ धरि ला जि वे सिं मा हा क्षणै नि ॥ १४॥ दे हा चा वि सर या वे नि
 ॥ दरी ने ॥ चरणा वे नि स्मरणे चित्त भुले ॥ सुख गोष्टि या सि करि तें ये
 ॥ कां त ॥ तेणे पुरे संत जन्म मरणा ॥ १५॥ ऐसे सां ने बोल्ये को नि
 ॥ पंढरि नाथे दि धल लुक कां ते अ भय दान निज रूप सां दे दा वि ता
 ॥ जाला वे गी ॥ ना म्या ते उ ना के गि ह द य क म किं ॥ १६॥ ज ति ॥ १७॥
 ॥ तें व दि ब्य र ल म णिं मु च्छ किं कि रि टि म कि ब ड ल ला टि क स्तु रि च्या
 ॥ मोर वि सां वे ठि कुं ड ले गो म टिं पा हा तु ह्या दृष्टि सकळ संता ॥ १८॥

ॐ ॥ जेपुंलिकचिप्रर्णपुर्वपुण्यरात्रिवैकुंठनिवासिआदिदेवो॥५॥
 ॥ वदननिर्मलसुस्मितवेल्हाळदरानिवज्रकीळनेजफांके॥सासु
 ॥ खाचेअधिकारीभक्तसप्रेमळहृदईसर्वकाळकतिध्यान॥२॥ दि
 ॥ कौतुमवैजयंतिपदकहृदयावरिशोभतसाजिरितुळसिमाळ
 ॥ श्रीवयलांछनप्रितिचैभुषणचर्चितेचंदनशामतुनु॥३॥ शं
 ॥ स्वस्वकरिकरकटावरिपितांबरधारिजळदनीळ॥समचर
 ॥ पास्यंभउभाईटेवरिरुळतातितोडरिंदानवदेस॥४॥ तेपोदि
 ॥ व्यतेजेब्रह्माडउजळेप्रकाशेंलोपुलेदिनमंडळ॥संतसकै
 ॥ द्विजदेखतिचतुर्भुजशंखचक्रांबुगदापापी॥५॥ किटपशुज
 ॥ पक्षिपावनतरुवरदेखतिद्विजवरनिठलरुप॥परमानंदबोध
 ॥ निवालेआनंदेंभेदाभेदहंदेविसरले॥६॥ येकेविषुदुजेनरि
 ॥ सेतेथेआननाहेआठवपोदेवभावा॥सत्वाह्यकोदलिजेवि
 ॥ ठलमूर्ति॥जेसुर्वविश्रान्तियेविंवि॥७॥ प्रेमवोसुडंतस
 ॥ कळैसंतजनदेवेआविर्भावायकुंठां॥हर्षेभरचित्तिहरिना
 ॥ मेगर्जतिपावलेविश्रान्तिनायकले॥८॥ अह्यानंदेसोहळा
 ॥ भोगविलासकळ॥९॥ लिलानपकांजिमळसिं॥करुणि
 ॥ सावधसोवैकुंठिचाराणा॥न्यमाधाळिवरणावरिसांव्या॥१०॥
 ॥ जति॥५२॥ बापभक्तप्रियउदाररुपादृष्टिकरितसुखगोष्टि
 ॥ ब्राह्मणसिं॥सर्वभाविंराषासर्वकालिमजतेहेभक्तजस
 ॥ खेमासे॥१॥ त्यांचेनिउपकारेंदाटलोंसंपूर्ण॥भक्तपराधिन
 ॥ जालोंतेपो॥५॥ निवृत्तिज्ञानदेवआणिहासोपानहेमगुट
 ॥ वर्द्धनससमूर्ति॥सर्वभूतिभजतिसद्गुरुसर्वथा॥केलेंसं
 ॥ आपतायांचेबुद्धि॥२॥ हाजनमैत्रिबलगुआमुवासोवरा
 ॥ सांडियेलेसंसारावाळनि॥मासानामिंदहधरुणिविश्वास॥
 ॥ अखंडउदासदेहभावि॥३॥ जिवाहनिपडियंताहाभक्तसोवता
 ॥ निर्धरिसंगतानवलयाचे॥हृदयविदारुणिआपुलेनिहाते॥
 ॥ ठावदिधलामातेलपावया॥४॥ वारादिवसाचाळोहासुरा
 ॥ मायाठाकियेलावेपुनादि॥तोमासाल्हाणीनिसादिवसापासीनि

॥ आधासे अक्षजेवि । नामं जैसे नामक वपिथा अवेवा संग जि
 ॥ भूदेवाणि ॥ २ ॥ ते जी की जीवनी गगन की पवनी । की दोष धरणिमा
 ॥ जिहता ॥ ते तु संगे चर जा ला कव पो युक्ति । हे खुण निरति संग
 ॥ मज ॥ ३ ॥ तु ही वेद व के सर्व शास्त्र दृष्टे परि ता हिं आसु निदृ पाव
 ॥ लेति ॥ सेद भ्रम तु म चाना हिं मा वळ ला ॥ प्र मु वि उ र ता सं दे हे सि ॥ ४ ॥
 ॥ जे के लि सं क ल्म सो डि ये ला ये णे ते को ओ पो रा ने घ त लि के सिं ॥ ते
 ॥ हे किं कां के लि ना हिं वि वार ण ॥ अ धि का र या ज न्ना ला डे को ना हिं
 ॥ ५ ॥ या चि ला गिं तु हां प्रार्थु नि बु णां संगे ॥ ना म्मा च्या प्र संगे घ ड लि
 ॥ से वा । आ शि वा द नुं ही दि ध त्मा मं त्रा क्ष ता ज्या च्या सा च्या मा
 ॥ थां टा की ये ल्या ॥ ६ ॥ म ज नि रा लं बा के लें अव लं बन । निः काम
 ॥ सिं पूर्ण कै ले काम ॥ हे सर्व वे ल तु ही ये कि ले सक किं । परि म
 ॥ सु मि बो ज र वी न ध र मा सी ॥ ७ ॥ निः सं देह भो ज ने के लि आ धिं
 ॥ तु हीं । उ र ले रं पे आ हीं स्वि कार ये ॥ य सिं वि धि यु क्त का य
 ॥ प्रा य श्चि त् । दा वा क व प्र व सा क्ष या से ॥ ८ ॥ या ह रे दा सां चि
 ॥ र ज तु म ये च र ण ती र्थ ॥ ते हीं नि नु मा सी ॥ तु म चि जे भा व
 ॥ ना ते वि फ लें तु हीं । ना मा त रं हीं नि क ल क ॥ ९ ॥ ज ति
 ॥ १० ॥ तं व दे व ह्य ण ति दि ज ॥ ते हीं नि नु मा सी ॥ ते हीं नि नु मा सी
 ॥ न गु ज तु हीं । वृ त्त त र व न स क ॥ क म त्रे या ये क भू न द या व
 ॥ से जे थे ॥ ११ ॥ ते चि ये क मा नि स क ष थ वा श्वा नि । न कि सं वे नि र्वा णि
 ॥ जी वे सा सिं ॥ १२ ॥ ज्ञा न वे सो भा ग्य म ति आ णि वै रा ग्य । त या चं
 ॥ आ रोग्य प्रे म र स । हा सिं सं जि व नि स दा सं त सं गु । त्या व रि ख नु
 ॥ रा गु व ज्र क ष च ॥ १३ ॥ ध र्म अ र्थ का म मो क्ष दृ ष्टि ना णि वो ल ग ति
 ॥ आ ग णि मु क्ति च्या ही । अ लु हा ते ग ज र हो त से ना मा वा । दी पु
 ॥ ताल क्षा वा पा ज ल तु ॥ १४ ॥ ई ड प दा दि के ना सि वं त सु खं । जे अ र्थ
 ॥ नि मि ष्यं हो ति ज ति ॥ ते जा णे नि सा च न ध रि या चि आ श । अ र्थ
 ॥ उ मा क्षा वा स ह र्द या च्या ॥ १५ ॥ ह्य णे नि सं सा रिं ध न्य ये कु ना मा
 ॥ जे णे मा क्षा प्रे मा अनु भ वि ला ॥ ते णे या च्या उ वि ष्टा जा लां अ धि
 ॥ का री ॥ उ प चारिं श्री ह रि न प वे जे थे ॥ १६ ॥ ज ति ॥ १७ ॥ म हां मु क्ति
 ॥ क्षेत्र ती र्थ चै ता र क उ प मे सिं आ णि क ना हिं दु जे ॥ ते हे प द र पुर

(K)

॥ प्रेमाचे भांडार । नामे निरंतर गजतसे ॥ १ ॥ येकडे तिथि जवळि अ
 ॥ सता समर्थ । कृष्णदेव्यह तदेव्यभाकी ॥ ४ ॥ जीवन्मुक्तानि
 ॥ जेथे पुंडलिक मुनि वै सत्ता सध्या निपर लुकी ॥ योगि हस मळि
 ॥ येनि जधे यने टके । ते ज्याचे नि सुखें वेडावले ॥ २ ॥ पुण्य पावन
 ॥ मिमादक्षुण वाहिनि । अमुत सजिवनि सुखरासी । आनंद रास
 ॥ कृपिका ते हव द्रभागा । दरनि नया गागर्भ वासा ॥ ३ ॥ स्वर्ग मिंद
 ॥ किनि लाजे निराहिनी । पाताळि प्रवेश लिभोगावति । सहस्र भा
 ॥ गगने होउनि भागी रथि सागरि मिळति जालि वेगि ॥ ४ ॥ सकल
 ॥ नुभागे याचे सुख आरोग्य ये । जे कांवे ग्याचे जन्म भूमि प्रथ
 ॥ हर्षे नि भरना मास ताचे संगति । गिति गाय किर्ति विठोबाचि
 ॥ ५ ॥ जति ॥ ७ ॥ सकल निष्काम वाचे जपेनामतो मासा परम
 ॥ प्राण सखा । जिबा हनि । न कंजीवा परता पुजि पर
 ॥ देवता भावे समि ॥ ६ ॥ हे माक्षी । दीज नि बिदावळि । हरि
 ॥ दासाचा कृति वळः । मोनि ध्याने कृति ये पुढ
 ॥ रिक्त सधन्य साचा वं । काया वामेने न विसंब
 ॥ सासिं ते मासा देवा । ॥ १ ॥ नामधार काचे उचि
 ॥ वृजेथे पुडे उभा राहे । सुखें । मज गोमटे सेवितां
 ॥ सुख वाटे ॥ तेणे माटे धा ॥ २ ॥ सास ॥ ३ ॥ बळ कान्ति पुष्टि
 ॥ येरातु छिप्रभा निचन विरोभा होय तेणे । वेसंत सोमरे मे
 ॥ एति जे बेकि ते मासि दिवा सुख सण ॥ ४ ॥ ह्मणे निना मया
 ॥ ते जेव विने सांगातें । बहु तदिव सह ते आर्त पोटी ॥ जाले ते
 ॥ अन्यथान हे पै सर्वथा पुडति सांगा आवां करणे काये ॥ ५ ॥
 ॥ जति ॥ ३ ॥ ते वृष्णति द्विज भैके छपानिधि प्रतिपदि
 ॥ वेदि जे जे धर्म । ते ते आचरो वे विहित क्रिया कर्म । जे जे वर्णा
 ॥ ॥ अमर्त्य जिजा ॥ १ ॥ तो पिधन्य जगिये कुदेह धारि आसतां
 ॥ संसारि जिवन्मुक्त ॥ ४ ॥ आचार प्रथम ब्राह्मणाचार्य ॥
 ॥ शौच निसने मसत वाणि ॥ तप ते शमदम धृत दक्ष पूर्ण । अखंड
 ॥ अनुसंधान सत्संगि ॥ २ ॥ स्नान सध्या जप होम अध्ययन विधि
 ॥ विष्णु पुजन कर निभावे ॥ वैश्वदेव आणि अतिथी पुजन । नैवे

कि

आ

॥ न वचे ब्रह्म यस्य अवस्य क ॥ ३ ॥ संपादुनि विधि सारा वें भोजन
 ॥ सावरि श्रवण पुराणार्थ ॥ सर्व काळि का रें संतुष्ट मान सधु
 ॥ निविश्वास वेद वचनि ॥ ४ ॥ तु ह्मी तं व सर्व सपन्न चतुरा द
 ॥ ५ ॥ स्वा वा विभु दिवा ॥ सांड निष्मिमान हा वें भुद्ध मति ॥ जेणें
 ॥ जोडे की तिउ मयलो की ॥ ५ ॥ जावें चंद्र भागे कर नि मंत्र स्त्रा
 ॥ न आवे हम दान सतु पुद्दी ॥ पुण्य जन क ये किं क्षेत्र प्रदक्षणा
 ॥ करा विपावन उ मय कुळ ॥ ६ ॥ ये को नि पंठ रिना थ बोले जालिव
 ॥ चुन ॥ आशा ते प्रमाण स्वामितु मवि ॥ कया वाचा मने मागे पा
 ॥ ते ध्यावें ॥ आमच्या सांभाळ वें नाम या सि ॥ ७ ॥ जति ॥ ३६ ॥ तु स्त्री
 ॥ सदाचार मं हुन ब्रह्म वदि ॥ सुम विवागे न देती र्थ तप ॥ सस वचन
 ॥ जळ पवित्र निर्मळ लता थ ॥ वळने जालि ॥ १ ॥ हा तु मचा विष्या
 ॥ सह आह मज तु स्त्री पासे पुज्या देव त ॥ २ ॥ स्नानाचा प्रकार
 ॥ आह पंच विध ॥ सांगे प्रविष्ट भाने पाचा ॥ आर्थि ठेउ निद वि
 ॥ विवेक व्यावापारे ॥ प्रत्यय इह ॥ विद्वानुपविता ॥ ३ ॥ उत्तम
 ॥ हुनि हुतम वोग सौ स्नान ॥ या न्ना वन आनना हि ॥ कया वाचा
 ॥ मने हें विद्वध सिद्धे ॥ मव सिद्ध ॥ ४ ॥ बाह्य जे मित्र
 ॥ मुचि सर्व काळ हे दु ॥ निमळ पुद्गलान ॥ हे जया सदैव चडे साय
 ॥ ५ ॥ योग आकाहि न लगे साधन सा सि ॥ ६ ॥ संकळ ई दि यां चा का वा
 ॥ निग्रहोदंज वा विग्रहो वा सने सि ॥ हे तिजे निर्मळ घडे जया ॥ स्ना
 ॥ न न लगे अनुष्ठान पुड ति या सि ॥ ७ ॥ सर्व कृतिं करुणा चो ध्ये परम
 ॥ स्नान ॥ साधी तो सज्जन विरुळा को मिह ॥ साचे निदर्शने जळ पा प
 ॥ रासितो सर्व ति र्था सिं ति र्थ राजु ॥ ८ ॥ पांच वें ते कया प्रहाळ वि
 ॥ जळि ॥ स्नाना व आंघोळि लो विका वि ॥ काम को धुलो भद्र भम
 ॥ दमळर हे दोष दुर्घर देह माजी ॥ ९ ॥ विवेक वैराग्य हे निवटा वेळा
 ॥ धिं का विवित चित्तें पुद्दी संत संगे ॥ अनंता जन्मा चे करा वे प्रा
 ॥ य प्रित ॥ वाचे वसे नि हराम लक्ष्या ॥ १० ॥ शांति क्षमां दया निज
 ॥ बोध निश्चि अरु उखळ तिज या पासी ॥ दो विज गिं धन्य ये क
 ॥ सि पांना मा आवता आह्मा जिव लु ॥ ११ ॥ जति ॥ ३७ ॥ ३७

16

॥ त्राथनिसकळिकां बोले याद वरावो फेज वासंदे हो वासनेचा ॥ स्ना
 ॥ नवि धिलुगिं जेवं चंद्र भागे संतावे निसंगे आत्मी तुही ॥ १ ॥
 ॥ बाप नैक प्रिय को तु कि मुनारि लिळावो डंबरि सेवकुरे ॥ २ ॥
 ॥ नाम याचा हात धरुणि हृदय कमळि ॥ चालिले ते वेळि समारं
 ॥ भो ॥ नरनारिसकळिकु पाहाविको तु कस्य गि ब्रह्मादिक ॥ ३ ॥
 ॥ ठेले ॥ २ ॥ सकळ संत संत मेळि पुढे सारंग धरु पोळि सिंदळ
 ॥ भारू आह्वण या ॥ आले भिमार्ति हरि नामे गर्जत केला प्र
 ॥ शिपात पुंडलिका ॥ ३ ॥ प्रसादु निचरण केला प्राणायाम बाप
 ॥ सकळ धर्म जनिता स्वयं ॥ सकळ द्विज कुळां करुणि प्रदक्षणा
 ॥ आरंभिलि जाणा स्नान विधि ॥ ४ ॥ चोचरु करु करुळनिष्ट
 ॥ छिबरी पितांबर धारि जळत कीळ ॥ कमळ नयन शाम सु
 ॥ खप्रभा साजिरि ते ध्यान पतरा सन कारिकां ॥ ५ ॥ तिळ
 ॥ दर्भ सुमने गोम प्रभस प्रतिका प्रभु निडुरावे दमंत्रे ॥ प्रदनि
 ॥ यां प्रभो गुजाले मंत्र स्नान केला नर ध्यान सनेत ॥ ६ ॥ ज्ञा
 ॥ त्रणा वेतो धर्मस्त ॥ ७ ॥ सावे केले अभिवंदन ॥
 ॥ सारनिया संन्यासि ॥ ८ ॥ ले भूदे दिधालि दान ॥
 ॥ दुपा दृष्टि मज केले पे ॥ ९ ॥ रवि लंघान आवडि वे ॥
 ॥ सकळ भविक लान धग ॥ १० ॥ मानावे जाह्यो सि आसुर पु
 ॥ ११ ॥ चालिले सतरा ॥ १२ ॥ आरादि ने बरां दिधलि दे
 ॥ हर्षे निर्भर ना मोना मोने निघे ॥ १३ ॥ नाचत ध्यान दे गत डारि
 ॥ १४ ॥ जति ॥ १५ ॥ सकळ भक्त मंडळि सहित वन माळि ॥ प्रवेश
 ॥ ले राउळि परमानंद ॥ सहिरु माई सयभा मांवे गिंदे वाते सा
 ॥ शं गिन मुस्कारिले ॥ १६ ॥ बाप सुख सिंधु स्वामि धर्म बंधु प्रि
 ॥ ति परमानंद निव विभक्त ॥ १७ ॥ सयभा मां केले चरण प्रक्षाल
 ॥ रसु माई विजणा जाणविते ॥ पिडियो देतरा उभित जवावा ही
 ॥ दृष्टि धालुनि पाई कव कि मुने ॥ १८ ॥ सुक सुने कारि नारद तुंबर
 ॥ करि तिज यजय कार नाम घोष ॥ १९ ॥ आळें बंदि ज न पढति विदो वळि
 ॥ ध्यान हृदय कमळि पंद्र तुडा ॥ २० ॥ निवृत्ति धाने पुर सोपान सां
 ॥ वता जवळि साजन मेत्रो वा लाविले ॥ सकळ कीर्ति पत्ती पुर
 ॥ मानंदे तृप्ति सारो नि श्रीपति आरोगणा ॥ २१ ॥ ये सो नि ये कांति वैकुं
 ॥ ठि चारणा करित विचारणा निज भक्तां सिं ॥ सकळिक आभंग

वे

॥ आरजीये ॥ ५ ॥ वेवसाई मन ठेउनि सुपण लाभा येवित्तन
॥ सर्व काळ ॥ या परि अखंड स्वहित विचारणा करिजे ते मन
॥ न सुखी ॥ ६ ॥ परपुराणी आसकने सविम्विचारिणी
॥ न लगति या मनीस हाथार ॥ कीटकी भुल्योडे संधु
॥ संघान निके निज ध्यासन येक विघ्न ॥ जो सर्व भाव येक
॥ विठलु विध्या ये सर्व रपी पाहेर पसावे ॥ रजत मानिस
॥ का सर्वाहु निवेगळा मो गिने मेकळा तोची भक्त ॥ ८ ॥ स
॥ हा वा सुभटु असंग येक दु वैराग्य उद्भुत येक निह ॥ प्रार
॥ ध्याचा भोगिने देह मृति अखंडीत धर्म निविकार ॥ ९ ॥
॥ निरमि वामन निज लास संपणिने स्वतः पशान संभ्रा
॥ ये ॥ अनुरागे गोविंद गाई जे येक ति या परति विधांति जा
॥ भिक्का हा ॥ १० ॥ कायाने वा हा मासा भुभव सा
॥ गित का सर्व कावड ॥ ११ ॥ हे जो विलेने उरा
॥ र सर्व संपाद ॥ १२ ॥ भक्त भागवत बहु साव
॥ देखिले बहूत ॥ १३ ॥ पेट ॥ परि न्यास सा ये जो ल
॥ न हे हं विस हार सख दुत मनीस निरोपम ॥ १४ ॥ हे तु सु
॥ ख विश्रान्ति नाहि हो कल्पति विचारावे संति दुरादृष्टी ॥ १५ ॥
॥ होतु शास्त्र वक्ते विसतीचे माथे होतु कांबहु श्रुत बुद्धि वत ॥
॥ होतु कर्म निष्ठ विद्येचे उत्कट ॥ होतु सर्व श्रेष्ठ पुज्य लोकां ॥ १६ ॥
॥ होतु कळावंत कविते कुशल होतु कांबाळ चतुरतेचे ॥ हो
॥ तु कां पाठक होतु कां साधक होतु कां वाक्क गंधाकार ॥ १७ ॥
॥ होतु कांबं हलानी होतु निज ध्यानी होतु वजास नीवैस
॥ येचे ॥ होतु योग युक्त होतु जिवन्मुक्त होतु कां विरक्त सर्व सं
॥ गी ॥ १८ ॥ ऐसे होतु कांस गाय सर्व हा संपन्न परि नमनीतु
॥ ज विण विष्णु दासा ॥ हे रवण जाणता येक पठरी राव रघु
॥ माई ना हो श्री विठल ॥ १९ ॥ जति ॥ १५ ॥

॥ पश्य मे प्रभासा आदिकुनि द्वागवती माहिल्या समसि
॥ मोक्षपुरी ॥ पंथी पावनतिथि कस निमण्य रूपे प्रशाळिती
॥ पापे सवासना ॥ १ ॥ पद रिचें प्रेम नो मया ये जिनि मा उठि
॥ भाठ विपांडुरंग ॥ ४ ॥ ते जिवन्मुक्त दोहो मक्त आणिल्या
॥ नी ॥ येतति परतो नि निज धामां ॥ मागि निरिज नितु बाकां
॥ त दोहो ॥ पडिले चिंतवनि जिवना लागि ॥ २ ॥ तं वद हिये कहु
॥ पदे रिक्ता अवचिता ॥ ठद कपा हातां न लगवेंतु ॥ कवणे प
॥ रिये ये होय रिगवणि ॥ प्राण संतर्पणि वांचवावे ॥ ३ ॥ मग नाम
॥ या प्रतिबोले शान देवो मज येक उपावसाध्य ओह ॥ लक्षि मे
॥ चें लाघव करुनि ते अवसरि ॥ उतरो निमित्तरि जीवन घेती ॥ ४
॥ ये उनि जीवन निघाला बाहेरि ॥ लोणे अवधारि नाम देवा
॥ आणुनि उदक देई न तु साहावि ॥ नरिस आनयुक्ति काहिये
॥ ये ॥ ५ ॥ पडलियां रुकट विचारि ॥ मनि सांडा विआयणि
॥ अभिमान पि ॥ दापन विरुद्धा दे सर्वे दिशि ॥ मासीका
॥ यहा सिंहाडि चिंता ॥ ६ ॥ आतो अभेद सर्व निरंतरि ॥
॥ आहो देस उक रि वेळ ॥ जाला नामा लुग धिर धरावाना
॥ वेक दाविन कोतुक ॥ मिला ॥ ७ ॥ जति ॥ ८ ॥ मग ल
॥ उनि नेत्र ॥ नि धारि पै केला ॥ दई आठ विला के रिराजु ॥
॥ रहु मित्र बंधु मन कजन नी ॥ नेणे तुज वाचुनि आणिक
॥ हुजे ॥ ९ ॥ ये गे पांडुरंग मज लागि धांवत ॥ सुणि पाहा सिअंत
॥ ह्या लुवा ॥ १० ॥ नुं सिधे मेरि निर्यति न हं वाटलि ॥ आसने ल
॥ टलि नेत्र कमळि ॥ धीरु न धरे जिवा ॥ फोकारिता धावा मिई
॥ मास्या के रावा मायवापा ॥ ११ ॥ कायामने वाचा ॥ विकलो च
॥ रणा सिं ॥ तो मिरारण कोण सिंजा वो आंता ॥ जन्मो निपो
॥ सिला ॥ तुसा लपति मज ॥ मोकलितां कज यई मकोणा ॥ १२
॥ आना थके करियाना मावि आयणि वणि जि पुराणि मि
॥ दि तु सी ॥ ते कायलाटे फेरि सिवाटे आजि ॥ आसु निज
॥ मासी करुणानये ॥ १३ ॥ गजे द्राकारणे ज्या तरे धावणे ॥ १४

[illegible]

॥ जालोहिं पुरि ॥ तुजविण ॥ ६८ ॥ अज्ञानाचा भ्रम होता म
॥ सेमनि ॥ हिंडविलो ॥ मणनिदारीदरि ॥ पदरिचें सुख पाहा
॥ ताको दिवाटे ॥ सुप्रितेहि कोहें न देखे वि ॥ २ ॥ उंदें दगि र्या
॥ चिये को जाय प्रोटी ॥ मन मासे वोटे पंढरिये ॥ मणोनि च
॥ मरणविद्विडि साउलि ॥ आलोमी साभाळि मायवापा
॥ ३ ॥ सादेवाचि वासन पाहति मासे नयन ॥ नाइकति श्रवसा
॥ किर्तियाचि ॥ तेणें पंथें मासे न चलवि वरपा ॥ न करि विपुज
॥ न करवाचो ॥ ४ ॥ कंठि करजे हिं पंठे विले ॥ न देखे पाउले इटकी
॥ सांते देव ह्मणतां लाजे मासे मन ॥ तेक दारुण कवणा सांगु ॥ ५
॥ ज्याच्या गाविंना हिं वै व्यावाचा मेका ॥ न देखे सुका बाहिरि
॥ येचा ॥ कुंचे गरुड केन देखे पतीका ॥ सादेवाचि शंका थोर
॥ वाटे ॥ ६ ॥ मणोनि पोखे देस विवाटजी विं ॥ ते वेळे आठ
॥ विरुपतुसे ॥ इष्ट विरुपतुसे देवतनामा ह्मणें नांम
॥ ह्मणें आवडता स्वामि ॥ ७ ॥ कैराव ह्मणें खंति वाटे मा
॥ शामनि ॥ निडानयेन निपाता तो वाट ॥ तुजविण उदास
॥ वाटे हे पंढरि ॥ नमो ॥ मणोनि सरस सा ॥ १ ॥ डोक्यां वेग
॥ काने वचें कोठे दुरि ॥ चित्त मज बरि ठेनि राहे ॥ ६८ ॥ तुज
॥ मासि सवे मज तुसि आवडि ॥ गुळो तेन संडि गोडि जे विं ॥ ते
॥ तेसें आलीतु ॥ होयें मेका माजि ॥ विचारितां सहजि दुजे नां
॥ हीं ॥ २ ॥ येतया जातया पुसेतु सि गोष्टि ॥ मासे नो मंदेष्टि दे
॥ विले होवे ॥ ताहान भुक् पिडा जाणाल कवण ॥ मज ये
॥ कंविण गुड त्याचे ॥ ३ ॥ रात्रि दिवस खंति करुनि मांजिवा
॥ असेल माझा धावा फोकारीत ॥ मज विण कोणाचे साउलि
॥ बेसेल ॥ कवणा सापुसेल सिण भागु ॥ ४ ॥ संतां पासि सांगे
॥ सिणेन मज विण ॥ कंठि ठेविल प्राण ॥ मज लागि ॥ मग उच्य
॥ लुनि चहुं भुजो दिधले आळि गण ॥ कुरवाळुनि वदनने
॥ त्रपुसी ॥ ५ ॥ काढुनि कंठि विसु मन तुळसि माका ॥ ६ ॥

॥ द्वालि वसेग कां नामया च्या ॥ सर्वांग सुंदर पाहे छपा दृष्टि
 ॥ पुसे जिवि व्या गोष्टि छपा सिंधु ॥ ६ ॥ निवृत्ति शाने शर सो
 ॥ पान खेवर नर हरि सो नार आदि करुनि ॥ मिळो निसक
 ॥ लभत लो रंग गणिये नि ॥ आळि गण देति नामया सिं ॥ ७
 ॥ अनिवार सुमने वष विसुर वर ॥ गगनि जय जय कार राब्
 ॥ होति ॥ रुचि गण गंधर्व मीळो निया सर्व ॥ दृष्टि सुख वैभव
 ॥ ध्यावया सिं ॥ ८ ॥ वंवर खु माई आरति येउनि आळि वेग
 ॥ गोवाळिले दोघा देव भक्त ॥ कौतुके नामया विधरुनि
 ॥ यां हनु वटि ॥ पाहे छपा दृष्टि जगन्माता ॥ ९ ॥ जति ॥ १० ॥
 ॥ केरा व ह्मणे नामया कुजु विभावले ॥ बहुत चर वेकले
 ॥ आसुहीत ॥ पुण्य पावन तीये रावले सकुटिक ॥ जन्मांत
 ॥ रिवारो कवि क्षुसि ॥ ११ ॥ धन्य तु वकेले जन्मो निसा
 ॥ र्थक ॥ शोक मोहादु खनिवारिले ॥ १२ ॥ तीर्थयात्रा पळका
 ॥ व्यासंप्रपन्न करीउ ॥ आपण विधे पुक्त ॥ केलिया कष्टाचे
 ॥ गइल सार्थक ॥ सांगेन आदि करुनि माई ॥ १३ ॥ महामुक्ति स
 ॥ जवै कुठ भुमि वरी ॥ विद्या नंद हरि पुण्य भूमी ॥ येक सीत
 ॥ अन्न अर्पे दिज मुनि ॥ सदा राहे सुखिक लवरी ॥ १४ ॥
 ॥ हो भवासि भावे पुजा वेजो ह्मणे ॥ वडर से भोजन धाव
 ॥ सां सिं ॥ सुगंध वंदन सुमन तुळसि माळा ॥ अपवितां वो
 ॥ का सदक्षणा ॥ १५ ॥ ऐसे जो लो निया देव नामा धरि येला करि
 ॥ राउळा मितरि येउनि आले ॥ रख माई सिं सांगे वेकुं च्या
 ॥ भाणा ॥ आजि आराधना नामया वि ॥ १६ ॥ जति ॥ १७ ॥ १८ ॥
 ॥ तं पदे जगन्माता ह्मणे छपा वंता ॥ करता कर विता कवन वा
 ॥ च्या ॥ हातु मचा आवडता कस अंतरंग पाकारि उद्देग करण
 ॥ गो ॥ १९ ॥ सर्व भार याचा लागे चालवणे ॥ रुपिया केले येणे ज
 ॥ न्मोजन्मी ॥ २० ॥ तु ह्मां परते या सिं जिवलग सोई रेग
 ॥ कवण पांदु सरे लोभा पर ॥ दृढ वरण तु मचे धरुनियां अ

॥तरी॥ जालासे अधिकरि सर्वस्वावा ॥२॥ जन्मोजन्मा
॥तरि जोडिले जे कां हि ॥ तितु केतु मया पाई निसेपिले ॥
॥लणनियानवे कळक गव संपूर्ण ॥ हावांवे उतिपा ॥ १॥
॥यावे ॥ ३॥ मायबापेंद ॥ सोपरी जिवलग ॥ सांडुनितु
॥मया संगे घरिले सुख ॥ लणनियानवे सुखलागे विचारवे
॥उचित तें करावे देवराया ॥ ४॥ आपुलिया दासा वा सत्त्वम
॥सोडळा ॥ करण हे गोपाका छिदतु मचे ॥ ररुमाई लणभा
॥यवंत तु मया ना मा ॥ मवलया वापे मानि च नवा ॥ ५॥
॥जति ॥ ३२॥ आतां वेगी जावें सरि सें या सिंध्यापे ॥ अवत
॥पोसा गवें ब्राह्मणसी ॥ सकल काम पूर्ण ॥ आहे तितु मचे
॥ ६॥ विचारों कां हि नलगे देवा ॥ काहकाई नलुभे
॥तु मचे छपाद छे ॥ सदा सुख व दिहरी व्यादासा ॥ ७॥
॥मगना मया वा हात ॥ धरि पदरी नोथ ॥ निघाले अक्षत
॥धावया सिं ॥ निघे तें राखे न मने च मान ॥ सांवता
॥जालुण घे अनिसरि ॥ ८॥ मोला मेळावका कां बिकारु
॥दे ॥ दोहि भागि देवडे ॥ न न कां ॥ नाम पावे पाठी सिं
॥ले गरुड ध्वज ॥ ९॥ ययार ॥ निज भक्तावे ॥ १॥ अमु
॥मया दासा वा सिंध्या वा आभिमानु ॥ लणनियजम
॥नु जाला देवो ॥ तेणे मिसें करितु क्षेत्र प्रदक्षणा ॥ आर्थनि
॥ब्राह्मण सकळ कोसि ॥ १०॥ अमुता थावा नाय दिना चा
॥गोसाविं ॥ प्रिति निचन विसेव कां चो ॥ तोयाना मया व्या
॥सुखाचा शृंगार ॥ ररुमाई भवतारु केरि राजु ॥ ११॥ जति
॥२॥ तंव ते अध्याय कपडीत अग्नि होत्रि ॥ येक ते श्री श्रीस
॥दाचार ॥ लणति आहाना हितु मचे स्वर पक्षान ॥ अपुर्व
॥दत्त पण दृष्टि आजि ॥ १२॥ सुखाचे पारणे केले येण रपे ॥ ते
॥णें प्रिविध तापें मावळली ॥ १३॥ कवण वृत्ति कये चालु वि
॥जिव्या मार ॥ योजिले बिहार कवणे गडी ॥ आजिव निधि
॥सकाय उपस्थिता एकोनि पंदरि नाथ बोला जाले ॥ २॥

॥सि कुल्लुटि॥ तरियासतसि ठाकी॥ पांसिमजवो छरि
॥निकटआहे॥ असंतोसंगु॥ सर्वकालयांचा॥ अनंतजन्मा
॥चारणानबंधु॥ ३॥ साक्षुतुमचेवरण करुषिषोलेवाथा
॥मीमित्रनामयाचा अंतरग॥ जिविचें गोप्यगूज संता
॥सिंपुसावें॥ निःसंदेहयावें नैवेद्यासि॥ ४॥ विदारतरि
॥असेराठकाभितरि॥ नामसांगोतरि अनंतजाणा॥ ५॥
॥रुणिस्नानविधिसिध्रवतयावें॥ सनाथकरावें दृष्टादृ
॥ष्टी॥ ५॥ ॥असिअमृतबाणारेकोनिश्रवणि॥ आनंदले
॥मनिभूदेवता॥ आशोदेतिदेवाजावें निजमंदिरा॥ सि
॥ध्रुवतकरापाकसिद्धि॥ ६॥ मगररवुमादेविप्रमिसंगे
॥विवंचना॥ प्रार्थिलेका॥ सक्केकांसांगते कर्मठ
॥अभिमानिनोठखनि॥ सत्ते॥ नोनितायांते याटेचोज
॥७॥ कुकटजिनांव पुसिलेवि॥ मल॥ म्यासांगितले
॥गुलसर्वसांसि॥ सं॥ ८॥ मित्रनामयाचा॥ अ
॥नंतजन्माचा निकट॥ ९॥ विदारतरिअसेरा
॥उठाभितरि॥ सांगें स्व॥ ककेतयां॥ नामतरिअनं
॥तसांगितलासकेत॥ १०॥ रवणवितनघेसांचे॥ ११॥
॥हांसोनिरवुमाइसणदुपानेधि॥ सदाभेदवुद्धिसा
॥चाठई॥ विधावयसांतीकुळाचाअभिमान॥ सा
॥कैचेचरणप्राप्तुमने॥ १२॥ उदारचक्रबतिभक्त्याविता
॥वां॥ भक्तांविधाभावावेळईतु॥ तोभाग्येसांपडलवैकुंठ
॥चाठेवा॥ उजरिज्वालिदैवां नामयाच्या॥ १३॥ जति॥ १४॥
॥तंवअष्टमांसिद्धि॥ १५॥ अहमंहाद्वरितिहिं सर्वसामग्रिसिद्ध
॥केलि॥ समार्जनगुटियादोरपो॥ मृंगारिलिंभुवनेपरिच्या
॥रिकीं॥ १॥ कायपुण्यबलें येणेविष्णुदासे॥ देवालोभपिसंला
॥वियलें॥ १॥ दारिद्रिपावळेचौकरंगमाळा॥ अभिनवसोह
॥ळाआरंभिला॥ हवेमंगलतुरंवाजतिअपार॥ भक्तजयजय
॥कारंगजनाति॥ २॥ तंवमंगलमार्जनेनाम्यातें करविले॥ मग
॥तेआरंभिलेंपुण्यावचना॥ देवांगेंवस्त्रेआपुलेनिहातें॥ वार

॥ अने तेना मरे वा ॥ ३ ॥ सध्या मारा हिरवु माई ज ननि ॥ वे
॥ गि ॥ अस्वपाणि घेउनि आल्या ॥ आनंद नरनारिको वृक पाहनि
॥ जिवे को बाळितिना मयासि ॥ ४ ॥ आपु लिखा दासां वाकारिस
॥ मारं ॥ दिना नाथ प्रभु ह्म पासिं घ ॥ यं यत्रो ह्मना माह्मणाति
॥ सकळिक ॥ नेपति याचं सुख ये ह्मं दिव ॥ ५ ॥ जति ॥ २५ ॥
॥ जाला स्वयं पाक ॥ न विधि सारा ॥ सकळिक ॥ हाकारा जाण
॥ विला ॥ व्यले मंहा दार दि धलि आसने ॥ पुजा नारायणे आ
॥ रं ॥ मेली ॥ १ ॥ ठकलो ह्म गति देव पाहो के सं जाले ॥ सय सु
॥ खने ले भक्त जनी ॥ ६ ॥ २ ॥ लज डित पाठा ॥ सत्त आण विव
॥ रिद्धि जे सवि पृथका करे ॥ चरण प्रसाद निपु सिले पित
॥ बरे ॥ मस्त कि आदर्श तिथं वंदी ॥ ३ ॥ कस्तुरि मळि वटु दिव्य ग
॥ धउदि ॥ चातलि माकटि तुळसी माको ॥ दरांग सुधु पर
॥ लाये पै रिप ॥ बोवालि नायक वै ह्मं ठिके ॥ ४ ॥ दोहं जे ह्म
॥ कि मांडिली देव डी ॥ रसु माई परवडि वाटे तेसे ॥ सुविध
॥ ७ ॥ ने आ वि लिं ब ॥ ससं पूर्ण ॥ भर्वा वई ॥ ६
॥ संकल्प सोडि लाना मया विव ॥ भक्त नृप जय करे ॥ ग
॥ र्जवति ॥ भोक्त नाशे ॥ जेना पाते ॥ तटी कुंद तां हि
॥ पुहो यथोर ॥ कुरवाळ ॥ मया यांचा स्वालि मुखि गंत वने
॥ परलक्षी तमय जाला ॥ ५ ॥ अंतरि चे गुज बोले ह्म पासि
॥ धु ॥ करुनिया सावधुनां मयासि ॥ जिवल गाजि विविध
॥ बाले सुख गोष्टी ॥ आर्त आहे पोटी बहु न दिवस ॥ ७ ॥ अं
॥ नरिचे सुख वा ह्म जतुं पाहे ॥ गगना असे काय पाठि पो
॥ ८ ॥ तैसा तो आनंदु आहे पै निर्मळ ॥ विदुप के वळ सदे दि
॥ त ॥ ७ ॥ तुझे ते विमो सं मोक्ष ते पै तुसे ॥ आहे ते सहज वि
॥ कविध ॥ परतो निया दृष्टि चालि मुज वरि ॥ मोते निरदि
॥ तुचि हो सि ॥ ८ ॥ हातु सासो हळा पाहे उघडां डोकां ॥ आहे
॥ मी जवळा शानदीप ॥ सुरवी ये ॥ आर्त तुसे भेटी आले म
॥ चरणे ॥ सुखाचें पारणे ॥ ९ ॥ परमानंद वृत्ति ध

॥ ह्यणो नि प्राणा हति घेलीया ॥ ५ ॥ भक्त भोक्ता कर्ता कर विता आपण ॥
 ॥ संकष्ट हज तेथें संपूर्ण सकळ काम ॥ विश्वंभर ह्यपाद दिसां भाळिर
 ॥ प्रार्थना करितुं ह्यणच्या ॥ ६ ॥ देखो निते स मृद्धि ठकले ठेले दिव
 ॥ ह्यण ति पाहा हो चो जन वल वैसे ॥ कव पाहा गहस्त के कदा भाग्य
 ॥ खंत ॥ ने पावे अदु त महि माया वि ॥ ७ ॥ जे विले आने दे धाले प्रे मा
 ॥ नंदं ॥ कर सु दि गो वि दे दि धलिया ॥ कपु रा सहित अपि यले विठे ॥ ८
 ॥ रजोडु निया पु टो वि न वि ता से ॥ ९ ॥ भक्ता ये भाग्य जाले सु ति मंत ॥
 ॥ ह्य आलें आर्त आवडी ये ॥ ते या नाना दे वे भुल विले लासे ॥ वेडा
 ॥ बले उभे चि दानंद ॥ १० ॥ जति ॥ १२ ॥ मग सकळ कान मस्कार क
 ॥ रु नि ॥ यां दे व रा वे सां गे जि वि वा ता वो त यां प्रति ॥ तु म चि ह्य पा द
 ॥ छि करा वे भोजन ते पा हो ह्य प रि हस ति दि ॥ ११ ॥ हे वि आ र्थ अ से अ
 ॥ खे डित जि वि ॥ ते आ डि गो स वि पू ण जि जे ॥ १२ ॥ क्षण ये क वै सा वे ल
 ॥ ख अंत कर पे ॥ सं ह सि ले दे ने त क सो दळ ॥ सं नु ह्य मान सें सा चा
 ॥ अंगि कार करा ॥ कृ ति कृ त मे दे रा जे स्वा मि ॥ १३ ॥ आ जितु म च्या
 ॥ ला भ जाला म प ये गे ॥ सा र्ग च उ ल से वा ॥ तु मि ब्रे
 ॥ ह्य वि न अं हा का पु ज्य सा भा लें ॥ १४ ॥ अ ह्य पा द दि ॥ १५ ॥ मज नि
 ॥ रा लं बा के ले अ वं उं व ना ॥ कामा दि पू णि के लें काम ॥ मी व्य क्ता थ
 ॥ संग तु म ये नि छ ता र्ज ॥ वि ये य था ॥ वि च य मा से ॥ १६ ॥ मग ते च नु
 ॥ वे दि म हा म त्र स्वे रे ॥ दि ज य म य क रें ॥ गर्ज ना ती ॥ वि ज ह् सर्व का
 ॥ ल हो व पु उ तो पु उ ति ॥ आ शि र्वा द दे ति सं नु ह्य चि तें ॥ १७ ॥ पि ता
 ॥ वरा वे अं वं किं घे ठ निया म त्र ह्ता घा त लि या मा थां ना म या वे ॥
 ॥ हे रि तु से प्रे म हां व पु उ तो पु उ ति ॥ मु खि ना म ध्या न रा हे स रा ॥ १८
 ॥ ह्य ण ति ध रा म स्त्र म ले ति थार ॥ ला ग ला उ ती र भो ज ना सिं ॥ सर्वा
 ॥ ठा ई स र्व नु ह्यी हो उ नि ये क का र ण सा र्थ क वे ले नि के ॥ १९ ॥ स्वा मि चा
 ॥ आ द र सां ग ता अ मि वे ने न म गौर व नि रा र्प म ॥ अ क ला प यं त मि त
 ॥ गं गी वि ङ्ग पे आ ह्या सां भा का वे पु उ तो पु उ ति ॥ २० ॥ आ तां सं ता चे
 ॥ पे री ता रो वे भो ज न का र वे परि पु ण जि वि रें का ला ॥ उ चि ह्य सा द
 ॥ ध्या ना ना म या ते ॥ आ स क र ति पा हा ते आ स तु म चि ॥ २१ ॥ जति ॥ २२ ॥

॥ सुवर्ण चैताटवोगरिले परिकर ॥ सुखमाईसुखरआणि
 ॥ येले ॥ कनककळसकरिसयभामाआलिआपौरानघा
 ॥ लिदेवराया ॥ १ ॥ सुखाचासुखतभक्तांचिंतामनिपुरवि
 ॥ तोआयणिअनाथाचि ॥ २ ॥ उद्धवअकुरनारदतुंबर
 ॥ आणिभक्तअपारपांथिकर ॥ महांद्वारिउभाहोतानामा
 ॥ ठेलानयनेखुणाविलापांडुरंगे ॥ ३ ॥ देवाचाबोरसुदेखे
 ॥ निगौरवदेहिदेहभावपारबला ॥ निजबोधेनिदविराहि
 ॥ लानिवांतहृदईवोसंतप्रेमसुखे ॥ ४ ॥ देखोनिपंढरिनी
 ॥ थधांविनलेवेसिंजैसिवडालागिंवाहिधेनु ॥ उचलु
 ॥ निवहुंभुजींरिधलेआळिंमआणिनाउमजुनदेहाव
 ॥ रि ॥ ५ ॥ धरनिवाहूकीटैमविताटीकुंदतांहिसुपुटि
 ॥ होयथोर ॥ कुरवाळी ॥ आधासालिमुखितंवतोपेरलक्षी
 ॥ तनमयलाडा ॥ ६ ॥ अंतरीचगुजालेहृदयसिंधुकरनियांसा
 ॥ वधुनामयांसिंजि ॥ गजाले ॥ येयाबालेसुखगेष्टीआर्त
 ॥ आहपोटिबहतदिवस ॥ ७ ॥ अंतरीचेंसुखबाह्यजतुंपाहे
 ॥ गगनाअसेकायपाठिपोट ॥ तैसातोआनंदआहपैनिर्मळ
 ॥ चिदपकेबळसहोदित ॥ ८ ॥ तुजेतंचिमासैतैसैसैआहेमासै
 ॥ तैसहजेयेकविध ॥ परतोनियांहृष्टिघालिमजवरिमितेनि
 ॥ रंतरीतंचिहोसि ॥ ९ ॥ हातुसासोहकापाडेउघडांडोकांआ
 ॥ हेमीजिवकाज्ञानहीपु ॥ आर्तेतुसैमेष्टिआलेभक्तराणे
 ॥ सुखाचेंपारणेकरियांसी ॥ १० ॥ परमानंदवृत्ति ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com